Resource: अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

Aquifer Open Study Notes (Book Intros)

This work is an adaptation of Tyndale Open Study Notes © 2023 Tyndale House Publishers, licensed under the CC BY-SA 4.0 license. The adaptation, Aquifer Open Study Notes, was created by Mission Mutual and is also licensed under CC BY-SA 4.0.

This resource has been adapted into multiple languages, including English, Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文).

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

MAT

मत्ती

मत्ती यह प्रदर्शित करता है कि नासरत का यीशु ही वह मसीहा, इस्राएल का राजा है, जिसकी लंबे समय प्रतीक्षा की गई थी, जिसने पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करते हुए अपने समकालीनों की अपेक्षा को पलट दिया। मत्ती रचित सुसमाचार यह दर्शाता है कि किस प्रकार यहूदी और गैर-यहूदी दोनों ही परमेश्वर के प्रकट किए राज्य में सही बैठते हैं। यह पाठकों को राजा के रूप में यीशु मसीह के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ जीने की चुनौती देता है।

घटनास्थल

मत्ती ने अपना सुसमाचार उस समय लिखा, जब आरंभिक मसीही समुदाय को एक प्रश्न का उत्तर देने की आवश्यकता थी: क्या यह यहूदी धर्म का एक संप्रदाय बना रहेगा या उस से अलग होकर एक भिन्न विश्वास बन जाएगा? मत्ती का सुसमाचार यरूशलेम के पास एक मसीही समुदाय से निकला है, जो उन यहूदियों से घिरा हुआ है, जिन्होंने अपना यहूदी विश्वास नहीं छोड़ा था। यह समुदाय, पौलुस की कलीसियाओं से अलग, स्थानीय गैर-मसीही यहूदियों द्वारा सताया जा रहा था।

मत्ती का सुसमाचार पढ़ने वाले मसीहियों को तोराह के प्रति सम्पूर्ण रीति से प्रतिबद्ध यहूदियों के बीच में यहूदी मसीहियों के समान रहने की चुनौती दी गई थी। याकूब की पत्री इसी के समान एक ऐसी मसीहियत को उजागर करती है, जो अब भी यहूदी आराधनालय से दृढ़ता से जुड़ी हुई है (देखें याकू 2:1–26)। यहाँ हम एक यहूदी मसीहियत को देखते हैं, जो यहूदी समुदाय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में उतनी ही दृढ़ है, जितनी अपने महिमामय प्रभु के प्रति (तुलना करें। प्रेरितों के काम 15:1–41)।

मत्ती का सुसमाचार बताता है कि यीशु के जीवन ने यहूदी मसीहियों को किस प्रकार प्रभावित किया जो पारंपरिक, वैधानिक, सामाजिक, और राजनीतिक चिंताओं से पीड़ित थे। उन आरंभिक मसीहियों के लिए मत्ती ने एक अत्यावश्यक प्रश्न का उत्तर दिया, "यहूदी धर्म से घिरे होने पर भी, हमें प्रतिदिन यीशु का अनुसरण कैसे करना चाहिए, जबकि हम सब को राज्य का सुसमाचार घोषित करना चाहते हैं?"

सार

मत्ती का वृतांत यीशु का उसके जन्म के पहले से लेकर उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान तक का अनुसरण करता है। यीशु ने एक बालक के रूप में संभावित खतरों की एक श्रृंखला का अनुभव किया (अध्याय 2)। एक वयस्क के रूप में, उसने परमेश्वर की धार्मिकता का प्रचार करने (अध्याय 5–7) और आश्चर्यचकित करने वाले आश्चर्यकर्म करने (8:1–9:34) की एक थोड़े समय की सेवकाई का आरंभ किया; उसने बारह प्रेरितों को भेजकर अपनी पहुँच का विस्तार किया (9:35–11:1)। हालाँकि, यीशु का अधिकांश अनुभव, गलील और यहूदिया के यहूदियों के हाथों अस्वीकार किया जाना है (अध्याय 11–17)। अपने अंतिम सप्ताह में उसने मंदिर में यहूदी अगुवों का सामना किया (अध्याय 21–22), लोगों का पथभ्रष्ट करने वाले अधिकारियों पर विपत्तियों की अंतिम श्रृँखला की घोषणा की (अध्याय 23), और यह भविष्यद्वाणी की, कि परमेश्वर यरूशलेम का न्याय करेगा तथा उसका नाश करेगा (अध्याय 24–25)। यहूदी अगुवों का और उनकी आस्थाओं, कि लोगों को आराधना कैसे करनी चाहिए और जीवन कैसे जीना चाहिए, का विरोध करने के लिए (अध्याय 26–27) यीशु को पकड़वाया गया, उस पर मुकदमा चलाया गया, और उसे क्रूस पर चढ़ा कर मार दिया गया। इसके बाद वह अपने पुनरुत्थान के द्वारा सही साबित हुआ और उसने सब जातियों के लोगों को चेला बनाने का महान आदेश अपने चेलों को दिया (अध्याय 28)।

मत्ती ने अपने सुसमाचार की दो तरह से रचना की है। पहली, एक परिचय के बाद (अध्याय 1–4), मत्ती ने यीशु की शिक्षण सामग्री को उसके जीवन के वृतांत के साथ बारी-बारी बताया है। इस प्रकार, हमारे पास अध्याय 5–7; 10, 13, 18, 23–25में उपदेश और शिक्षाएँ हैं; और अध्याय 8–9; 11–12, 14–17, 19–22, 26–28में उसके जीवन का वृतांत है। दूसरी, मत्ती ने अंत के दिनों में अपने राज्य के आगमन के विषय में यीशु द्वारा प्रचार किए गए इस्राएल के लिए परमेश्वर के संदेश को दर्ज किया है (4:12–11:1; देखें 4:17), जिसके बाद विभिन्न लोगों से इस संदेश को मिली प्रतिक्रियाओं को भी उजागर किया है (11:2–20:34)। इसके बाद मत्ती मानव जाति के उद्धार के लिए यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के विषय में (अध्याय 21–28) बताता है।

लेखक

मत्ती एक चुंगी लेने वाला था, जिससे यीशु ने मित्रता की तथा न्याय और आज्ञाकारिता का जीवन जीने के लिए बुलाया (9:9)। मत्ती ने कई मित्रों को यीशु के साथ एक संध्या बिताने के लिए आमंत्रित किया (9:10–13), और मत्ती यीशु के बारह प्रेरितों में से एक कहलाया (10:2–4; साथ ही देखें मरकुस 3:16–19; लूका 6:13–16; प्रेरितों के काम 1:13)। आरंभिक कलीसिया की परंपरा यह बताती है कि अपने सुसमाचार की रचना के बाद, मत्ती 60 के दशक ई. सन्. में भारत में प्रचार करने के लिए पलिश्तीन से निकाल गया (यूसेबियुस, *कलीसिया का इतिहास* 3.24.6)।

100वीं शताब्दी ई. सन्. के आरंभ के समय में, हिएरापोलिस के बिशप, पापियास, ने यह बयान दिया, "इसलिए मत्ती ने इब्रानी भाषा में [या, 'इब्रानी शैली में'] ईश्वरीय-वाणी की रचना की और प्रत्येक ने अपनी क्षमता के अनुसार उनकी व्याख्या की। पापियास के कथन का पारंपरिक रूप से यह अर्थ समझा जाता है कि प्रेरित मत्ती ने इब्रानी या अरामी भाषा में एक सुसमाचार लिखा, और इस सुसमाचार का बाद में यूनानी भाषा में अनुवाद किया गया, संभवतः किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा जो मरकुस रचित सुसमाचार को भी भली-भाँति जानता था। हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि पापियास मत्ती की यहूदी शैली का उल्लेख कर रहा था, न की उसकी भाषा (इब्रानी या अरामी) का, क्योंकि मत्ती का सुसमाचार "अनुवादित यूनानी" जैसा प्रतीत नहीं होता है (अर्थात, यूनानी का वह प्रकार जो प्रायः अन्य भाषाओं से अनुवादित सामग्रियों में पाया जाता है)।

1800वीं शताब्दी में, विद्वानों को विश्वास हो गया कि मत्ती ने एक स्रोत के रूप में मरकुस के सुसमाचार का उपयोग किया। इन विद्वानों ने तर्क दिया कि क्योंकि एक प्रेरित ने यीशु के जीवन को दर्ज करने के लिए किसी अन्य सुसमाचार (और वह भी किसी ऐसे द्वारा लिखा हुआ जो प्रेरित ना हो) का उपयोग नहीं किया होगा, इसलिए मत्ती उसके नाम से कहलाए जाने वाले सुसमाचार का लेखक नहीं था। किन्तु आरंभिक परंपरा मरकुस रचित सुसमाचार को प्रेरित पतरस से जोड़ती है, यह एक ऐसा तथ्य है, जो मत्ती की मरकुस पर निर्भरता को और अधिक समझने योग्य बनाता है। इसमें कोई विवाद नहीं है कि एक प्रेरित (मत्ती) दूसरे प्रेरित (पतरस) के विवरणों को अपने लेख को आकार देने के लिए एक सुविधाजनक स्रोत के रूप में उपयोग कर रहा है।

लेखन प्रयोजन

पौलुस की पत्रियों या यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य से अलग, सुसमाचारों की स्थितियों का अनुमान उन पुस्तकों के भीतर ही दी गई टिप्पणियों और दिए गए ज़ोर से लगाया जाना चाहिए (देखें 24:15; 27:46; 28:15), क्योंकि प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध नहीं है। मत्ती ऐसे समय में लिखा गया प्रतीत होता है, जब मसीही और यहूदी ऐसे विषयों पर वाद-विवाद कर रहे थे, जैसे कि व्यवस्था का पालन कैसे करें (5:17–48; 15:1–20), मसीह कौन है (अध्याय 1–2), परमेश्वर के असली लोग कौन हैं (इस्राएल या कलीसिया; 21:33–46), परमेश्वर के लोगों के यथोचित अगुवे कौन हैं (4:18–22; 10:2–4; 21:43; 23:1–36; 28:16–20), और अन्यजाति कलीसिया और इस्राएल से कैसे संबंधित हैं (2:1–12; 3:7–10; 4:12–16; 8:5–13; 15:21–28; 28:16–20)।

इस बात पर गंभीर वाद-विवाद है कि क्या मत्ती का सुसमाचार उस समुदाय से आया था, जो अब भी यहूदी धर्म का हिस्सा था या उस से जो पहले से ही यहूदी धर्म के बाहर था। दूसरे शब्दों में, क्या मत्ती का मसीही समुदाय यहूदी धर्म से अलग हो चुका था, या वह अब भी यहूदी धर्म का हिस्सा था? या, क्या मत्ती किसी एक विशिष्ट समुदाय के बजाय सामान्य श्रोताओं के लिए लिखा गया था? आरंभिक मसीहियत में विविधता थी; कुछ मसीही अगुवों, जैसे की याकूब, ने यहूदी समुदायों के साथ अपने संबंध बनाए रखे। इस प्रश्न पर चर्चा करते हुए, विद्वान निम्नलिखित खंडों की जाँच करते हैं: 2:1–12; 4:12–16; 8:5–13; 10:5–6; 15:21–28; 17:24–27; 19:28; 21:43; 22:7; 23:1–39।

तिथि और घटनास्थल

मत्ती संभवत: 65 और 80 ई. सन्. के बीच किसी समय लिखा गया था। जो लोग यह तर्क देते हैं कि मत्ती ने मरकुस के सुसमाचार का एक स्रोत के रूप में उपयोग किया, वे मत्ती को प्रायः 70 ई. सन्. के बाद का बताते हैं; जो लोग दावा करते हैं कि इसे स्वतंत्र रूप से लिखा गया, वे इसे इससे पहले की तिथि का बताते हैं। कुछ लोगों ने प्रस्तावित किया है कि मत्ती का सुसमाचार 50 के दशक ई. सन्. में लिखा गया था। कई लोगों का आज के समय में मानना है कि मत्ती को सीरिया के अन्ताकिया में लिखा गया, जो किसी भी अन्य प्रस्तावित स्थान की तुलना में अधिक संभावित है।

अर्थ तथा संदेश

मत्ती का तर्क है कि यीशु इस्राएल के प्राचीन विश्वास और पुराने नियम की आशा को पूर्ण करता है: यीशु में, मसीह और प्रभु का दिन आ गया है।

कुछ लोग निश्चित रूप से यीशु का अनुसरण करते है। यीशु के निर्देशों का पालन करते हुए, ये शिष्य रोमी जगत में प्रचार करेंगे और एक ऐसे समुदाय (एक कलीसिया) का निर्माण करेंगे, जिसमें यहूदी और अन्यजातीय दोनों ही सम्मिलित होंगे। हालाँकि, साधारणतः, इस्राएल अपने मसीहा का अनुसरण करने से इन्कार करता है, और यीशु ने चेतावनी दी है कि जब तक वे पश्चाताप नहीं करेंगे (अध्याय 23–25) उन्हें परमेश्वर के न्याय का सामना करना पड़ेगा।

अर्थ तथा संदेश

मत्ती का सुसमाचार यीशु को मसीहा और स्वामी के रूप में प्रस्तुत करने, स्वर्ग के राज्य पर ज़ोर देने, शिष्यता के लिए उसकी ओर से दृढ़ बुलाहट के लिए, पुराने नियम की पूर्ति करने में उसके स्थिर स्वरूप का होने, यहूदी धार्मिक अगुवों के उसके आलोचक होने, और उसके सार्वभौमिक दृष्टिकोण होने जिसमें अन्यजाति भी राज्य में सम्मिलित हैं, में विशिष्ट हैं।

मसीह (ख्रीस्त)। मत्ती यीशु के मसीह (ख्रीस्त) होने पर ज़ोर देता है (1:1, 16–18; 11:2–3; 16:16, 20; 23:10)। वह पुराने नियम की प्रत्याशाओं की पूर्ति के रूप में यीशु पर ध्यान केंद्रित करता है, हालाँकि उस रीति से नहीं जैसा कि उसके यहूदी समकालीनों ने अपेक्षा की थी। मत्ती के लिए, यीशु स्पष्ट रूप से परमेश्वर का पुत्र है, जो अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करने कुँवारी मरियम से जन्मा (1:21)। संक्षेप में, यीशु "इम्मानुएल, जिसका अर्थ है 'परमेश्वर हमारे साथ' है"(1:23; 28:20)।

स्वर्ग का राज्य। मत्ती द्वारा तीस बार उपयोग की गई अभिव्यक्ति, "स्वर्ग का राज्य", यहूदियों के लिए "परमेश्वर का राज्य" कहने का एक विस्तृत तरीका है। मत्ती इस शब्द का प्रयोग (1) यीशु मसीहा के उद्धार के कार्य द्वारा पृथ्वी पर परमेश्वर के अदृश्य किन्तु उपस्थित राज्य को उजागर करने; (2) पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं के पूर्ण होने (4:17; 11:11–15); (3) परमेश्वर के प्रायः शांत और विनम्र रीति से, उद्धार का कार्य करने (11:25; 13:24–30, 36–43); (4) परमेश्वर के काम करने के पराक्रम और सामर्थ (11:2–6, 12–13; 12:28); (5) एक "पीढ़ी" के भीतर राज्य के आने (10:23; 16:28; 24:34); (6) परमेश्वर के अंतिम न्याय करने (25:31–46); और (7) परमेश्वर के सभी पवित्र लोगों की पिता के साथ उत्तम संगति (8:11–12; 13:43; 22:1–14; 26:29) के लिए करता है। स्वर्ग का राज्य अपने लोगों के बीच में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के उत्तम शासन को दर्शाता है, जो कलीसिया से आरंभ होकर महिमा और संगति के अनन्त राज्य में पूरा होता है।

शिष्यता। मत्ती का सुसमाचार पुरुषों और स्त्रियों को बपतिस्मा लेने, चेलों के रूप में उसके पीछे चलने, उसकी शिक्षाओं का पालन करने (28:20), और उसके साथ संगति का आनंद लेने के लिए यीशु की बुलाहट पर ज़ोर देता है। यीशु ने अपने पहाड़ी उपदेश में उसका शिष्य होने की आवश्यकताओं का सार दिया है (अध्याय 5–7), और यह विषयवस्तु सम्पूर्ण मत्ती में दोहराई गई है (उदाहरण के लिए, 10:1–42; 16:24–26)। मत्ती चेलों को मसीह की सहायता से उनकी असफलताओं पर जय प्राप्त करते हुए दर्शाता है (देखें 14:28–33; 16:5–12)।

पुराने नियम का पूरा होना। किसी भी अन्य सुसमाचार से अधिक, मत्ती पुराने नियम की प्रत्याशाओं और प्रतिज्ञाओं तथा यीशु में उनके पूर्ण होने के बीच के गहरे संबंध पर प्रकाश डालता है। एक यहूदी व्याख्यात्मक निबंध की शैली में, मत्ती पुराने नियम के मूल-पाठों को यीशु के जीवन की घटनाओं से जोड़ता है, जो उन मूल-पाठों को पूरा करते हैं, तथा प्रायः पुराने नियम और नए नियम के बीच समानताएं निकालते हैं। मत्ती की प्रक्रिया इस विश्वास पर आधारित है कि जो परमेश्वर ने इस्राएल में एक बार किया, उसे अंत में और पूर्ण रूप से, यीशु मसीह में फिर से कर रहा है।

सार्वभौमिक दृष्टिकोण। एक ऐसी पुस्तक में जिसकी प्रबल यहूदी शैली है, मसीह के उद्धार के कार्य में अन्यजातियों को सम्मिलित करने पर इतना ज़ोर देना आश्चर्यजनक है। किसी भी अन्य से अधिक, यह सुसमाचार इस बात पर ज़ोर देता है कि शुभ संदेश अन्यजातियों सहित सब के लिए है। इस रुख ने मत्ती को अपने समय के यहूदी समुदाय के साथ दो महत्वपूर्ण प्रश्नों पर लाकर विरोध में खड़ा कर दिया: परमेश्वर के लोग कौन हैं? इस्राएली जाति का क्या भविष्य है? जन्म वृतांत दिखाते हैं कि परमेश्वर अन्यजातियों का उद्धार करता है, तथा सम्पूर्ण पुस्तक में अन्यजातियों को सकारात्मक रूप में दर्शाया गया है। क्योंकि परमेश्वर प्रभुतासम्पन्न है, उसका मसीहा इस सम्पूर्ण सृष्टि का राजा है। हालाँकि परमेश्वर ने विशेष रूप से इस्राएली जाति में और उसके द्वारा कार्य किया है (देखें 10:5–6; 15:24), स्वर्ग के राज्य का आरंभ परमेश्वर के अनुग्रह को जातियों के साथ भी साझा करता है (देखें 28:18–20)।